

SHRI PUNAM SURI

Shri Punam Suri is the President of the DAV College Managing Committee, India's largest non governmental educational body with more than 900 institutions covering every discipline of education. He is also the Managing Editor of the Daily Milap, India's largest and oldest Urdu newspaper, the President of the Arya Pradeshik Pratinidhi Sabha, Chancellor DAV University, Jalandhar as well as the President of Arya Yuva Samaj.

2. Born on March 25, 1948, Shri Suri is an alumnus of St. Georges College, Mussoorie, and Panjabi University, Patiala. He is widely recognized for his role in uplifting the educational standards throughout the country due to his innovative ideas and his continual focus on embracing change through incorporating new technologies, a belief he pursued even while at Milap.

3. Shri Suri envisions the kind of education which would bring peace and harmony. His conviction that "the ultimate aim of all education is to build character" which is the need of the country, led him to change the very focus of education from job orientation to character building. To achieve this aim, he started numerous programs both in the educational and social space.

4. Under his dynamic leadership, educational systems have reached newer heights. He started programs such as Smarter Classes Mean Smarter Students - for computerization of all teaching and management functions; Intellectual Hub - for academic/research exchange among teachers raising the quality of thought & teaching, Project Integrate - to increase awareness and facilitate the integration of differently abled children into mainstream; Best Practices & Academic Audit - to improve the quality of teaching; Motivational Workshops - on improving life skills, motivating and invigorating all factors of the educational spectrum , be they Principals, faculty or students.

5. Shri Suri cherishes a deep concern for social reform, environmental and national upliftment, and this has led to the creation of project SAVE, which is an innovative holistic approach for total national upliftment comprising of three divisions to SAVE Environment: Grow More Trees, whereby trees are being planted to protect mother earth's green cover and over 1,50,000 saplings were planted in the first year itself; SAVE Water: Project Boond, sensitizing people to conserve water and reduce wastage and promoting rainwater harvesting in which more than 10 lakhs students participated; SAVE Life: Donate Blood, leading to collection of over 25,000 units of blood in just the first month through voluntary donation.

6. Shri Suri has also started programs such as Charitra Nirman Shivir — to enhance character building among youth; he started the Arya Yuva Samaj, an institution for the youth to campaign against the vices of dowry, female infanticide and corruption thus instilling the habit of service in the youth. He has also helped natural disaster victims by mobilizing resources, volunteers and finances for the calamity stricken areas and has continually used his resources to aid the government programs as well. He has also organized more than 700 community weddings for the under privileged.

7. Shri Suri has been bestowed the title of Arya Ratan for his exemplary contribution to the fields of education and social reforms. He has also been bestowed with the degree of Doctor of Philosophy, Honoris Causa, by Tirthankar Mahavir University, for his outstanding contribution to social development through value-based education.



श्री पूनम सूरी

श्री पूनम सूरी डी ए वी कॉलेज प्रबंधन समिति के अध्यक्ष हैं जो शिक्षा की हर विधा को कवर करते हुए 900 से अधिक संस्थाओं वाला भारत का एक वृहत्तम गैर-सरकारी शैक्षणिक निकाय है। आप भारत के सबसे बड़े और पुराने उर्दू समाचार-पत्र 'डेली मिलाप' के प्रबंधक सम्पादक, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष, डी ए वी यूनिवर्सिटी, जालंधर के कुलाधिपति और आर्य युवा समाज के अध्यक्ष भी हैं।

2. आपका जन्म 25 मार्च, 1948 को हुआ था और आप सेंट जॉर्जेज कॉलेज, मसूरी और पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला के एल्युमनस हैं। आपको मिलाप में कार्य करते हुए अपने अभिनव विचारों एवं नई प्रौद्योगिकियों को समाहित करके परिवर्तन को अंगीकार करने पर सतत रूप से जोर देने के लिए, पूरे देश में शिक्षा के मानकों के उत्थान में आपके विशेष योगदान के लिए सर्वत्र जाना जाता है।

3. आपका नजरिया एक ऐसी शिक्षा की ओर है जिसमें शांति और सौहार्द कायम हो। आपकी इस अवधाराणा ने कि "शिक्षा का अंतत: लक्ष्य चरित्र निर्माण है" और जो देश की आवश्यकता भी है, आपको शिक्षा को नौकरीपरक बनाने के बजाय चरित्र निर्माण करने और इसमें परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित किया। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, आपने शैक्षिणिक और सामाजिक दोनों क्षेत्रों में अनेकानेक कार्यक्रमों का आयोजन करना प्रारंभ किया।

4. आपके कुशाग्र एवं सक्रिय नेतृत्व में शिक्षा प्रणाली नूतन सफलता की उचाइंयों तक पहुंची है। आपने सभी शिक्षण एवं प्रबंधन कार्यों के कंप्यूटरीकरण के लिए – "स्मार्टर क्लासेस मीन स्मार्टर स्टूडेन्ट्स"; विचारों एवं शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए शिक्षकों के बीच शैक्षणिक/अनुसंधान संबंधी साझादारी हेतु – "इन्टेक्चुअल हब", दिव्यांग बच्चों के मुख्य धारा में एकीकरण के लिए जागरूकता बढ़ाने एवं उन्हें सहायता पहुंचाने हेतु – "प्रोजेक्ट इंटीग्रेट", शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए –"बेस्ट प्रैक्टिसेस एंड एकेडेमिक ऑडिट", शिक्षा के परिदृश्य के सभी घटकों चाहे वे प्राचार्य, फैकल्टी अथवा छात्र, जो भी हों, के जीवन कौशल में सुधार लाने, उनको प्रेरित और अनुप्राणित करने के लिए –"मोटिवेशनल वर्कशॉपस" जैसे कार्यक्रम प्रारंभ किए।

5. आपने सामाजिक सुधार, पर्यावरणीय और राष्ट्रीय उत्थान के लिए गहरी संवेदना को पोषित किया और इसके फलस्वरूप "सेव" परियोजना का सृजन हुआ जो सकल राष्ट्रीय उत्थान के प्रति एक अभिनव एवं समग्र दृष्टिकोण है और जिसमें 'सेव' पर्यावरण के तीन प्रभाग शामिल हैं अर्थात: ज्यादा से ज्यादा पेड़ उगाओ (ग्रो मोर ट्रीज) जिसके तहत धरती माता के हरित क्षेत्र की रक्षा करने के लिए वृक्षारोपण किया जा रहा है और पहले ही वर्ष में 1,50,000 से अधिक पौधों का रोपण किया गया; जल बचाओ (save water) बूंद परियोजना, जिसमें लोगों को जल संरक्षण करने और इसकी बर्बादी रोकने तथा वर्षा जल संभरण के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और इसमें 10 लाख से अधिक छात्रों ने भाग लिया; जीवन बचाओ (save life): रक्तदान करें, जिसके फलस्वरूप स्वैच्छिक रक्तदान के जरिए पहले माह में ही 25,000 यूनिट से अधिक रक्त का संग्रहण किया गया।

6. आपने युवाओं के बीच चरित्र निर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए "चरित्र निर्माण शिविर" जैसे कार्यक्रमों का भी प्रारम्भ किया; आपने दहेज, बालिका भ्रूण हत्या और भ्रष्टाचार की बुराइयों के विरूद्ध अभियान चलाने के लिए युवाओं की एक संस्था "आर्य युवा समाज" की भी शुरूआत की और इस प्रकार, युवाओं में सेवा की आदत जागृत करने का प्रयास किया गया। आपने प्राकृतिक आपदा के पीड़ितों की मदद हेतु आपदा प्रभावित क्षेत्रों के लिए संसाधन, स्वयं सेवियों और धन की व्यवस्था की और साथ ही सरकारी कार्यक्रमों में सहायता पहुंचाने में अपने संसाधनों का निरंतर उपयोग किया। आपने कमजोर तबके के लोगों के लिए 700 से अधिक सामूहिक विवाह उत्सवों का भी आयोजन कराया है।

7. आपको शिक्षा एवं सामाजिक सुधार के क्षेत्र में अपने अनुकरणीय योगदान के लिए "आर्य रत्न" की उपाधि से विभूषित किया गया। आपको मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से सामाजिक विकास की दिशा में आपके उत्कृष्ट योगदान के लिए तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी, आनरिस कौसा की उपाधि से अलंकृत किया गया है।